कथा सरिता

देने में ही महानता

पेड़ व वृक्षों की तरफ देखो, आँधी तूफान व बारिश के थपेड़े सहते हैं। लोग फलदार वृक्षों पर पत्थर मारते हैं। और ज़रूरत पड़ने पर उसे काट भी डालते हैं। लेकिन वृक्ष हमेशा फल व फूल ही हमें देते हैं। उसे जितनी बार पत्थर मारोगे उतने ही फल देंगे और जितनी ज़ोर से हिलायेंगे उतने ही फूल देंगे। जिसके पास जो होगा वही तो देगा। तुम क्यों परेशान होते हो। तुम तो दया करना सीखो। अपने आप को ढ़ालना सीखो। (ये हमें रोज़ अपने मन को समझाना है) उस जीव के अपने संस्कार हैं, और मेरे अपने संस्कार हैं। मुझे अपने रोल की तरफ ध्यान देना है। और उसे अपने रोल की तरफ ध्यान देना है। जो शख्स हमें पीड़ा पहुँचा रहा है। वो खुद कितनी पीड़ा में होगा। उसके मन की स्थिति का अनुमान लगाना है। तुम्हारा दुख स्वत: ही समाप्त हो जायेगा।

लेना भी नहीं आता

मेरी इच्छा से प्रभु इच्छा ज़्यादा अच्छी है एक महिला ख़ुद के बालक को लेकर किराने की दुकान पर ख़रीदी करने के लिए गई। जब स्त्री ख़रीदी कर रही थी तब उसका बालक व्यापारी के सामने देखकर हँस रहा था। व्यापारी को बालक का निर्दोष हास्य ख़ूब ख़ूब प्यारा लग रहा था। उसे ऐसा लग रहा था कि इस बालक का हास्य उसके पूरे दिन की थकान उतार रहा है।

व्यापारी ने उस नन्हें से बालक को अपने पास बुलाया। बालक जैसे ही व्यापारी के पास में आया, उसने नौकर से चॉकलेट का डिब्बा मंगवाया। उसने बरनी खोल कर उस बालक की ओर आगे की और बोला- ''बेटा तुझे जितनी चॉकलेट चाहिए , उतनी इस बरनी में से ले ले। बालक ने उसमें से चॉकलेट लेने को मना कर दिया। व्यापारी बालक को बार-बार चॉकलेट लेने को बोलता रहा और बालक ना करता रहा।

बालक की माता दूर खड़ी यह पूरा घटनाक्रम देख रही थी। थोड़ी देर के बाद व्यापारी ने ख़ुद बरनी में हाथ डालकर मुट्ठी भरकर चॉकलेट बालक को दी। बालक ने दोनों हाथ का खोबा बनाकर व्यापारी द्वारा दी गई चॉकलेट को ले ली और व्यापारी का आभार मानते हुए वह कूदते-कूदते माँ के पास चला गया।

दुकान में से ख़रीदारी करने के बाद माँ ने बालक से पूछा- ''बेटा तुझे वह अंकल चॉकलेट लेने को बोल रहे थे तो भी तू क्यों चॉकलेट नहीं ले रहा था? लड़के ने ख़ुद के हाथ की ओर इशारा करते हुए कहा- देखो मम्मी! अगर मैंने अपने हाथ से चॉकलेट ली होती तो मेरा हाथ बहुत छोटा है, तो मेरे हाथ में बहुत कम चॉकलेट आती, परंतु अंकल का हाथ बड़ा था, उन्होंने दिया तो ढ़ेर सारी चॉकलेट आयी और मेरा पूरा खोबा भर गया।

इसी तरह हमारे हाथ से ऊपर वाले के हाथ बहुत बड़े हैं, और उनका दिल भी बहुत बड़ा है। इसलिए उनसे मांगने के बजाय वह क्या देने वाले हैं वह उन पर छोड़ दीजिए। हम अगर स्वयं कुछ भी लेने जाएंगे तो छोटी सी मुट्ठी भरेगी। परंतु ईश्वर के ऊपर छोड़ेंगे तो हमारा पूरा खोबा भर जाएगा। इतना मिलेगा।।

आतुर है ईश्वर तुझे सब कुछ देने के लिए ।
पर तू चम्मच लेकर खड़ा है दरिया मांगने के लिए।

जब हमें कोई दु:ख दे...

दो भाई समुद्र के किनारे टहल रहे थे , दोनों में किसी बात को लेकर बहस हो रही थी, अचानक बड़े भाई ने छोटे भाई को थप्पड़ मार दिया।

छोटे भाई ने कुछ नहीं कहा सिर्फ रेत पे लिखा ....'आज मेरे भाई ने मुझे मारा'।

अगले दिन दोनों फिर समुद्र के किनारे घूमने निकले , छोटा भाई समुद्र में नहाने लगा, अचानक वो डूबने लगा, बड़े भाई ने उसे बचाया।

छोटे भाई ने पत्थर पे लिखा ....'मेरे बड़े भाई ने मुझे बचाया' तब बड़े भाई ने पूछा ....!! जब मैंने तुम्हें मारा तो तुमने रेत पे लिखा, और आज मैंने तुमको बचाया तो पत्थर पे लिखा; ऐसा क्यों.....???

विवेकशील छोटे भाई ने जवाब दिया - जब हमें कोई दु:ख दे तो रेत पे लिखना चाहिए ताकि वो जल्दी मिट जाए, परन्तु यदि कोई हमारे लिए अच्छा करता है .....तो हमें पत्थर पे लिखना चाहिए .... जो मिट न पाए और हमेशा के लिए यादगार बन जाए।

दृष्टि नहीं दृष्टिकोण

गुरू से शिष्य ने कहा: गुरूदेव ! एक व्यक्ति ने आश्रम के लिये गाय भेंट की है।

गुरू ने कहा - अच्छा हुआ। दूध पीने को मिलेगा।

एक सप्ताह बाद शिष्य ने आकर गुरू से कहा: गुरू जी! जिस व्यक्ति ने गाय दी थी, आज वह अपनी गाय वापिस ले गया।

गुरू ने कहा - अच्छा हुआ ! गोबर उठाने की झंझट से मुक्ति मिली।

'परिस्थिति' बदले तो अपनी 'मनोस्थिति' बदल लो। बस दु:ख सुख में बदल जायेगा।

सुख दु:ख आख़िर दोनों मन के ही तो समीकरण हैं।

अंधे को मंदिर आया देख लोग हँसकर बोले - मंदिर में दर्शन के लिए आए तो हो, पर क्या भगवान को देख पाओगे? अंधे ने कहा: 'क्या फर्क पड़ता है, मेरा भगवान तो मुझे देख लेगा।'

दृष्टि नहीं दृष्टिकोण सकारात्मक होना चाहिए।

हिम्मत आपकी मदद उसकी

एक बार एक किसान का घोड़ा बीमार हो गया। उसने उसके इलाज के लिए डॉक्टर को बुलाया। डॉक्टर ने घोड़े का अच्छे से मुआयना किया और बोला...

आपके घोड़े को काफी गंभीर बीमारी है। हम तीन दिन तक इसे दवाई देकर देखते हैं, अगर यह ठीक हो गया तो ठीक, नहीं तो हमें इसे मारना होगा। क्योंकि यह बीमारी दूसरे जानवरों में भी फ़ैल सकती है।

यह सब बातें पास में खड़ा एक बकरा भी सुन रहा था। अगले दिन डॉक्टर आया, उसने घोड़े को दवाई दी और चला गया। उसके जाने के बाद बकरा घोड़े के पास गया और बोला, दोस्त, हिम्मत करो, नहीं तो यह तुम्हें मार देंगे। दूसरे दिन डॉक्टर फिर आया और दवाई देकर चला गया। बकरा फिर घोड़े के पास आया और बोला, दोस्त तुम्हें उठना ही होगा। हिम्मत करो, नहीं तो तुम मारे जाओगे। मैं तुम्हारी मदद करता हूँ।

चलो उठो। तीसरे दिन जब डॉक्टर आया तो किसान से बोला, मुझे अफ़सोस है कि हमें इसे मारना पड़ेगा क्योंकि कोई भी सुधार नज़र नहीं आ रहा।

जब वो वहाँ से गए तो बकरा घोड़े के पास फिर आया और बोला, देखो दोस्त, 'करो या मरो' वाली स्थिति बन गयी है। अगर तुम आज भी नहीं उठे तो कल तुम मर जाओगे। इसलिए हिम्मत करो। हाँ, बहुत अच्छे। थोड़ा सा और, तुम कर सकते हो। शाबाश, अब भाग कर देखो, तेज़ और तेज़।

इतने में किसान वापस आया तो उसने देखा कि उसका घोड़ा भाग रहा है। वो ख़ुशी से झूम उठा और सब घर वालों को इकट्ठा करके चिल्लाने लगा, चमत्कार हो गया, मेरा घोड़ा ठीक हो गया। हमें जश्न मनाना चाहिए..। हिम्मत रखें जीने की। अगर हम हिम्मत का एक कदम आगे बढ़ाएंगे, तो हमारी ज़िन्दगी बच जाएगी। तभी तो ऊपर वाला कहता है कि तुम हिम्मत का एक कदम आगे बढ़ाओ तो मैं हज़ार कदम आगे बढ़ाऊंगा। हम सिर्फ आई हुई परिस्थितियों के प्रभाव रूपी चश्में से ही देखते हैं। देखना तो ये चाहिए कि अपनी क्षमता को पूर्ण रूप से क्रियान्वित कर रहे हैं या नहीं।

दिल्ली-आर.के. पुरम। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'तनाव के बिना सफलता' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए सी.पी.डब्ल्यू.डी. के लैंड एंड डेवलपमेंट ऑफिसर आनंद मोहन, प्रो. ब्र.कु. ओंकार, ब्र.कु. अनीता, ब्र.कु. नंदा, ब्र.कु. सोनी तथा अन्य।

दिल्ली-हरिनगर। ज्ञानचर्चा के पश्चात् पुलिस कमिश्नर अमूल्य पटनायक,आई.पी.एस. को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. सारिका तथा कर्नल बी.सी. सती।

वहादुरगढ़-हरियाणा। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के कार्यक्रम में सम्बोधित करते हुए ब्र.कु. अंजली। साथ में बायीं ओर विधायक की धर्मपत्नी संतोष कौशिक तथा दायीं ओर ज्योति बहन,डायरेक्टर,जीवन ज्योति हॉस्पिटल।

गया-ए.पी.कॉलोनी। महाशिवरात्रि पर आयोजित 'शिव संदेश शांति यात्रा' को झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए डॉ. कुसुम रॉय,वाइस चांसलर,मगध युनिवर्सिटी, डॉ. कुसुम सिन्हा, प्रो. सबिता, रागिनी बहन,वार्ड काउन्सलर तथा ब्र.कु. सुनीता।

गोरखपुर-उ.प्र.। महाशिवरात्रि के कार्यक्रम में मेयर सत्या पाण्डेय को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. पुष्पा।

जमशेदपुर-झारखण्ड। टाटा स्टील कम्पनी के संस्थापक एवं विश्व विख्यात उद्योगपति जे.एन. टाटा के 178वें जन्मदिवस पर विभिन्न संस्थाओं के साथ ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा भी 'वुमेन एम्पावरमेंट' विषय पर रैली का आयोजन किया गया। इस रैली में उपस्थित हैं ब्र.कु. अंजू तथा अन्य ब्रह्माकुमारी बहनों के साथ जन समूह।